Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 4 | (Oct – Dec 2025)

शून्य-अपशिष्ट फैशन: एक सतत परिप्रेक्ष्य

डॉ० मलयज गंगवार
असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ़ डिज़ाइन
मोदी यूनिवर्सिटी ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, लक्ष्मणगढ़, सीकर, राजस्थान

सारांश

वर्तमान समय में फैशन उद्योग न केवल वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, बल्कि यह पर्यावरणीय संकटों का भी एक बड़ा स्रोत बन चुका है। वस्त्रों के उत्पादन, रँगाई-छपाई, परिधान-निर्माण और अंततः उनके परित्याग तक की प्रक्रिया में बड़ी मात्रा में जल, ऊर्जा, रसायन एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों की खपत होती है। जिसके परिणामस्वरूप जल-स्रोतों के प्रदूषण, कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि तथा अपशिष्ट-प्रबंधन की गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इन पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु 'शून्य-अपशिष्ट' (Zero-Waste) फैशन की अवधारणा एक सशक्त विकल्प के रूप में उभर रही है। इस पद्धति में ऐसी डिज़ाइन और निर्माण तकनीकों का समावेश होता है, जिनसे वस्त्र का एक भी टुकड़ा व्यर्थ नहीं होता है। प्रस्तुत शोध-पत्र शून्य-अपशिष्ट फैशन की मूल अवधारणा, इसके अंतर्गत उपयोग में लाई जाने वाली तकनीकों, भारत की पारम्परिक शिल्प-कलाओं में इसके अनुप्रयोग, इससे मिलने वाले सामाजिक-आर्थिक एवं पर्यावरणीय लाभ तथा इसे अपनाने में आने वाली प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण करता है। साथ ही, इसमें शून्य-अपशिष्ट फैशन की संभावनाओं को लेकर भविष्य की दिशा को भी रेखांकित किया गया है।

मुख्य शब्द: शून्य-अपशिष्ट, पूर्ण वस्त्रोपयोग, सतत फैशन, उन्नत-पुनर्चक्रण, पारम्परिक वस्त्र एवं परिधान।

प्रस्तावना

समाज में व्याप्त हो चुकी 'त्वरित फैशन' की प्रवृत्ति ने फैशन उद्योग को शीघ्र उत्पादन और कम लागत में अधिक लाभ अर्जित करने के उद्देश्य के साथ अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बना दिया है। इस प्रवृत्ति से फैशन एक उपभोग आधारित प्रणाली में परिवर्तित हो गया है, जहाँ उपभोक्ताओं को बार-बार नए परिधान खरीदने के लिए प्रेरित किया जाता है। वैश्विक स्तर पर पिछले 15 वर्षों में किसी परिधान को धारण करने की औसत संख्या में 36% की गिरावट आई है। अर्थात् वर्तमान में लोग एक परिधान को पहले की तुलना में कम बार धारण करते हैं और जल्द ही उसे अपशिष्ट मान लेते हैं। नए परिधानों के उत्पादन में प्रयुक्त सामग्री का 1% से भी कम भाग पुनर्चक्रित हो पाता है, फलतः वस्त्र उद्योग को प्रतिवर्ष 100 अरब डॉलर से अधिक के संसाधनों की हानि होती है जो पर्यावरणीय असंतुलन का एक बड़ा कारण बन चुका है।

तेज़ी से बदलते फैशन ट्रेंड्स, परिधानों की निम्न स्तर की गुणवत्ता तथा सीमित समय में बड़े स्तर पर इनके उत्पादन के साथ-साथ अल्प समय तक ही इनका उपयोग आदि जैसे घटक जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन व अपदूषण तथा अपशिष्ट प्रबंधन की जटिलताओं को उत्तरोत्तर बढ़ाते हैं। सूती वस्त्र एवं परिधानों का एकमात्र स्रोत कपास का पौधा है। वैश्विक स्तर पर उपयोग किए जाने वाले कुल कीटनाशकों का लगभग ग्यारह प्रतिशत भाग केवल कपास की खेती में व्यय होता है। इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में 'शून्य-अपशिष्ट' फैशन की अवधारणा एक वैकल्पिक और उत्तरदायी समाधान के रूप में उभर रही है। यह अवधारणा न केवल फैशन डिज़ाइन की प्रक्रियाओं को अधिक विवेकपूर्ण बनाती है, बल्कि पारम्परिक शिल्पों, स्थानीय संसाधनों और टिकाऊ उत्पादन प्रणाली को भी प्रोत्साहित करती है। शून्य-अपशिष्ट फैशन उपभोक्ता और निर्माता दोनों

को यह समझने का अवसर देता है कि फैशन केवल प्रदर्शन का माध्यम न होकर हमारी पर्यावरणीय व सामाजिक जिम्मेदारी का भी एक अभिन्न अंग है।

शून्य-अपशिष्ट की परिभाषा और विकास

शून्य-अपशिष्ट ऐसी डिज़ाइन प्रक्रिया है, जिसमें उत्पाद निर्माण के प्रत्येक चरण में अपशिष्ट की उत्पत्ति को या तो समाप्त कर दिया जाता है या उसे पुनः उपयोग योग्य बनाया जाता है। शून्य-अपशिष्ट की अवधारणा का उद्देश्य न केवल वस्त्रों के अपव्यय को रोकना है, बल्कि उत्पादन की प्रत्येक प्रक्रिया को इस प्रकार डिज़ाइन करना है कि पर्यावरणीय प्रभाव न्यूनतम हों।

इस अवधारणा का प्रारम्भिक विकास 1990 के दशक में हुआ जब परिधान-निर्माण की प्रक्रिया में पारम्परिक रूप से वस्त्र को काटने के कारण उत्पन्न हो रहे वस्त्र अपशिष्ट पर गंभीरता से ध्यान दिया गया। प्रारम्भ में यह अवधारणा परिधान-डिज़ाइन हेतु एक वैकल्पिक प्रयोग के रूप में उभरी, परन्तु बढ़ते पर्यावरणीय संकटों, सतत विकास की वैश्विक आवश्यकताओं के चलते 21वीं सदी में यह एक गंभीर और स्वीकार्य दृष्टिकोण के रूप में स्थापित हो चुकी है। शून्य-अपशिष्ट फैशन का विकास केवल तकनीकी नवाचार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने फैशन की नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और पारिस्थितिकी संतुलन जैसे व्यापक पहलुओं को भी समाहित किया है। यह केवल एक डिज़ाइन अवधारणा ही नहीं, अपितु फैशन के पारम्परिक दृष्टिकोण को चुनौती देने के साथ-साथ एक नई सोच को भी जन्म देता है।

शून्य-अपशिष्ट फैशन में तकनीकें

शून्य-अपशिष्ट फैशन को साकार करने के लिए विभिन्न डिज़ाइन तकनीकों और डिजिटल टूल्स का सहारा लिया जाता है, जो अपशिष्ट को न्यूनतम करने और संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने में सहायक होते हैं। ये तकनीकें न केवल पर्यावरणीय रूप से लाभकारी हैं, बल्कि रचनात्मकता और उपभोक्ता-सुख भी प्रदान करती हैं।

शून्य-अपशिष्ट पैटर्न कटिंग : वस्त्र उद्योग में अपशिष्ट का सबसे बड़ा भाग परिधान-निर्माण की कटिंग प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होता है, जो कुल उपयोग किए गए वस्त्र का लगभग दस से बीस प्रतिशत होता है। सामान्य कटिंग प्रक्रिया में, वस्त्र को परिधान के पैटर्न के आकार में काटे जाने के बाद, पैटर्न के चारों ओर बचा हुआ शेष वस्त्र अनुपयोगी होकर अपशिष्ट में परिवर्तित हो जाता है। शून्य-अपशिष्ट पैटर्न कटिंग तकनीक के अंतर्गत परिधान इस प्रकार डिज़ाइन किये जाते हैं कि उनके पैटर्न परिधान-निर्माण के समय आवश्यक वस्त्र की पूरी लम्बाई व चौड़ाई का उपयोग कर सकें, जिससे वस्त्र का कोई भी टुकड़ा बेकार न जाए। इसके लिए परिधान को इस प्रकार डिज़ाइन किया जाता है कि उसके पैटर्न से कटे हुए वस्त्र के टुकड़े आपस में जोड़ने पर एक सम्पूर्ण वांछित परिधान बन जाता है। इस तकनीक में यदि वस्त्र बच भी जाता है तो उससे परिधान को अलंकृत करने का कार्य अथवा परिधान के साथ धारण करने हेतु अन्य उत्पाद बना दिए जाते हैं।

इस तकनीक में CAD (Computer-Aided Design) तथा CLO 3D जैसे सॉफ़्टवेयर अत्यंत उपयोगी होते हैं। यह सॉफ़्टवेयर परिधान-निर्माण से पूर्व ही परिधान का सम्पूर्ण स्वरूप प्रदान करने के साथ-साथ उसके निर्माण में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न सामग्रियों व वस्त्र की आवश्यक मात्रा तथा उनके अपशिष्ट का विश्लेषण करने में सहायक होते हैं। इससे सामग्री की बचत के साथ-साथ उत्पादन प्रक्रिया की दक्षता भी बढ़ती है।

ड्रेपिंग तकनीक: यह एक पारम्परिक परन्तु अत्यंत प्रभावी तकनीक है, जिसमें परिधान का निर्माण वस्त्र को मानव-शरीर के आकार के मॉडल पर लपेटकर किया जाता है। साड़ी ड्रेपिंग तकनीक का एक प्रमुख उदाहरण

है। इस तकनीक में वस्त्र के प्राकृतिक गुणों जैसे– प्रवाहशीलता, लचीलापन, बनावट आदि को ध्यान में रखकर परिधान-निर्माण किया जाता है।

मॉड्यूलर एवं बहुउद्देशीय डिज़ाइन : मॉड्यूलर डिज़ाइन वह पद्धति है, जिसमें परिधान को कई हिस्सों में इस प्रकार बनाया जाता है कि उन्हें आवश्यकतानुसार जोड़ा या हटाया जा सके, जैसेकि एक कुर्ता, जिसमें आस्तीनों, कॉलर या उसके अन्य भाग बदले जा सकते हों। बहुउद्देशीय डिज़ाइन के अंतर्गत परिधान को विभिन्न प्रकार से धारण करने योग्य बनाया जाता है, जैसेकि एक स्कर्ट को टॉप या ड्रेस के रूप में धारण करना। यह दृष्टिकोण संसाधनों के अधिकतम उपयोग को बढ़ावा देने के साथ-साथ उपभोक्ता को कम संख्या में अधिक विकल्प प्रदान करता है। यह दोनों तकनीकें संसाधनों के अधिकतम उपयोग को बढ़ावा देने के साथ-साथ उपभोक्ता को एक ही परिधान में अनेक शैलियों का अनुभव देती हैं।

उन्नत-पुनर्चक्रण तकनीक : इस तकनीक में पुराने या अनुपयोगी वस्त्रों व परिधानों को पुनः उपयोग में लेकर नए, आकर्षक और मूल्यवर्धित परिधान या उत्पाद बनाए जाते हैं। भारतीय शिल्प कलाओं में यह तकनीक पहले से ही विद्यमान रही है, जैसेकि गुदड़ी या कथरी, थैले, कांथा कढ़ाई, पैचवर्क आदि। वर्तमान में डिज़ाइनर पुरानी जीन्स, साड़ियों, टी-शर्ट आदि से नए जैकेट, बैग, श्रग आदि बना रहे हैं। पुनर्चक्रण तकनीक में सामग्री की लागत न के बराबर होती है। यह न केवल पर्यावरण के लिए उपयोगी है, बल्कि इससे स्थानीय कारीगरों, विशेषकर महिलाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। शून्य-अपशिष्ट फैशन की अवधारणा पर आधारित इन तकनीकों के संयुक्त उपयोग से फैशन को पर्यावरणीय चेतना के साथ सफल व्यावसायिक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

भारत में शून्य-अपशिष्ट परम्परा

पारम्परिक वस्त्र एवं परिधान: भारत में प्राचीन काल से ही परिधानों की रचना में शून्य-अपशिष्ट की अवधारणा अंतर्निहित रही है। वर्तमान में नए नामों से पहचाने जाने वाले संघाटी या सट्ट-साटक, उष्णीष, उत्तरीय, अंतरीय तथा नीवि, अर्थात् लुंगी आदि ऐसे अनेक प्राचीन परिधान हैं, जिनमें वस्त्र का अपव्यय बिल्कुल नहीं होता है साथ ही यह बिना किसी कटाई और सिलाई के प्रयोग में लाए जाते हैं।

साड़ी (संघाटी या सट्ट-साटक): भारतीय महिलाओं की पहचान साड़ी शून्य-अपशिष्ट फैशन का आदर्श उदाहरण है। यह सामान्यतः 5.5 मीटर लम्बा तथा 1.3 मीटर चौड़ा वस्त्र होता है, जिसे बिना काटे शरीर पर लपेटकर धारण किया जाता है। इसको धारण करने की विभिन्न शैलियाँ इसे सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट बनाती हैं।

पगड़ी (उष्णीष): संस्कृति और सामाजिक प्रतिष्ठा की सूचक पगड़ी के रूप में सामान्यतः 9 से 12 मीटर लम्बा वस्त्र पुरुषों द्वारा सिर पर बिना काटे लपेटकर धारण किया जाता है। एक ही पगड़ी को विभिन्न प्रकार से बार-बार बाँधा जा सकता है, जो टिकाऊ जीवन-शैली का प्रतीक भी है।

धोती (अंतरीय): इसे पुरुष अपने कटि-प्रदेश पर लपेटकर धारण करते हैं। इसका आकार तथा इसको धारण करने का स्वरूप क्षेत्रीय परम्पराओं के अनुसार अलग-अलग होता है। इसका कोई भी भाग काटा नहीं जाता, जिससे यह पूरी तरह शून्य-अपशिष्ट की अवधारणा को साकार बनाती है।

गमछा: यह एक बहुपर्यायी वस्त्र है, जो पसीना पोंछने, सिर ढकने, कमरबंद या तौलिया के रूप में उपयोग किया जाता है। इसे बिना काटे विभिन्न अवसरों पर आवश्यकतानुसार प्रयुक्त किया जाता है।

वर्तमान के दुपट्टा (उत्तरीय), कलीदार कुर्ता व पेटीकोट आदि शून्य-अपशिष्ट फैशन का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। भारतीय परम्परा में 'जितने गज, उतने उपयोग' का सिद्धांत रहा है, जहाँ प्रत्येक परिधान अपने जीवनचक्र

में कई रूप धारण करता था-

नवीन परिधान → दैनिक परिधान → पोंछा → बंधन सामग्री → जैविक खाद

हस्तांतरण परम्परा: भारत में पुराने वस्त्रों व परिधानों के हस्तांतरण की समृद्ध परम्परा सदियों से चली आ रही है, जो आज के शून्य-अपशिष्ट एवं सतत फैशन के सिद्धांतों के अनुरूप है। परिवारों में बच्चों के परिधानों को भाई-बहनों के मध्य आदान-प्रदान करना, शादी के परिधानों को पीढ़ी दर पीढ़ी धारण करना, हाथ से बुने पुराने ऊनी परिधानों को खोलकर नये परिधान बुनना जैसी परम्पराएँ न केवल पर्यावरण-संरक्षण में सहायक हैं, अपितु सामाजिक सम्बन्धों को भी मजबूत करती हैं।

मरम्मत और पुनरुपयोग परम्परा: भारतीय समाज में वस्त्रों का दीर्घकालिक उपयोग केवल आर्थिक आवश्यकता ही नहीं, अपितु सांस्कृतिक परम्परा का भी हिस्सा रहा है। मरम्मत, पुनरुपयोग तथा पुनरावृत्ति की प्रवृत्तियाँ भारतीय परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं। ये परम्पराएँ शून्य-अपशिष्ट फैशन के मूल सिद्धांत पर आधारित हैं, जिनमें संसाधनों का अधिकतम उपयोग और न्यूनतम अपव्यय सुनिश्चित है।

कांथा कढ़ाई (बंगाल): यह एक पारम्परिक तकनीक है, जिसमें पुरानी साड़ियों या धोतियों को कई परतों में जोड़कर, उन पर रनिंग स्टिच के माध्यम से सुंदर आकृतियाँ उकेरते हुए रजाई, शॉल, थैले एवं घरेलू उपयोग की विभिन्न वस्तुएँ बनाई जाती हैं। यह रचनात्मकता के साथ-साथ पुराने वस्त्रों व परिधानों को नया जीवन देने का उत्कृष्ट उदाहरण है।

रफू: यह फटे हुए वस्त्र की मरम्मत करने की एक अत्यंत सूक्ष्म और कलात्मक विधि है, जिसमें फटे हुए वस्त्र को इस प्रकार जोड़ा जाता है कि मरम्मत का चिह्न भी दिखाई नहीं देता है। यह केवल आर्थिक बचत ही नहीं, अपितु वस्त्र या परिधान के साथ व्यक्ति की भावनाओं को भी सहेजने का प्रयास है।

राजस्थानी पैचवर्क: राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में कपड़े की सीमित उपलब्धता ने रचनात्मक समाधानों को जन्म दिया, जिनमें से एक है पैचवर्क। पारम्परिक रूप से इस तकनीक में परिधानों के निर्माण के पश्चात् बचे विभिन्न रंगों, छापों व बनावट वाले वस्त्रों के टुकड़ों को अलंकृत रूप से जोड़कर नया वस्त्र तैयार कर दिया जाता है। यह शिल्प न केवल वस्त्र-अलंकरण का माध्यम है, बल्कि संसाधनों का प्रभावी पुनरुपयोग भी है।

चिन्दी दरी: यह भारत की पारम्परिक शून्य-अपशिष्ट कला का बेजोड़ नमूना है। चिन्दी दरी पुराने वस्त्रों की लम्बी-लम्बी पट्टियों (चिंदी) अथवा उनसे बनी डोरियों से बुनकर बनाई जाती है, जो वस्त्र अपशिष्ट को नया जीवन देती है।

भारत में शून्य-अपशिष्ट के सिद्धांत पर आधारित अनेक शिल्प-कलाएँ एवं परम्पराएँ देखने को मिलती हैं, जो न केवल संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को दर्शाती हैं, अपितु वस्त्रों व परिधानों को लम्बे समय तक उपयोगी बनाए रखने, उनकी सुंदरता में वृद्धि करने तथा शिल्पकारों को रोजगार उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

शून्य-अपशिष्ट फैशन के लाभ

शून्य-अपशिष्ट फैशन केवल पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को ही नहीं दर्शाता, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर भी अनेक लाभ प्रदान करता है। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से इसके बहुआयामी प्रभाव को समझा जा सकता है-

पर्यावरण संरक्षण : वस्त्र-उद्योग पर्यावरण के लिए एक गंभीर खतरा बन चुका है। यह उद्योग विश्व भर के कुल

कार्बन उत्सर्जन का 10% हिस्सेदार है। इस उद्योग में उपयोग होने वाले 60% कच्चे माल में प्लास्टिक शामिल होता है और हर वर्ष परिधानों की धुलाई से समुद्र में लगभग 5 लाख टन माइक्रोफाइबर प्रवाहित होकर जाते हैं, जो 50 अरब प्लास्टिक की बोतलों के बराबर होते हैं। वैश्विक स्तर पर वस्त्र-उद्योग का अपशिष्ट जल-प्रदूषण के लगभग 20% हिस्से के लिए जिम्मेदार है। शून्य-अपशिष्ट फैशन की अवधारणा न केवल वस्त्र एवं परिधान-निर्माण की प्रक्रिया में उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट की मात्रा में कमी लाती है, बल्कि इससे इनके निर्माण की औद्योगिक प्रक्रिया से होने वाले जल एवं भूमि प्रदूषण में भी गिरावट होती है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र सुरक्षित रहता है। इसके अतिरिक्त यह अवधारणा वस्त्रों के जीवनचक्र को लम्बा खींचकर उन्हें लैंडफिल में जाने से रोकती है।

संसाधनों की बचत: कपड़े की कटाई के दौरान बचे टुकड़ों को समाप्त करने से जल, ऊर्जा तथा रसायनों की खपत में कमी आती है। इसके अलावा डिज़ाइन प्रक्रिया को डिजिटल माध्यम से नियोजित कर उत्पादन की दक्षता भी बढ़ाई जाती है।

शिल्प को बढ़ावा: शून्य-अपशिष्ट फैशन की अवधारणा कांथा, पैचवर्क तथा चिन्दी बुनाई जैसी पारम्परिक शिल्प-कलाओं को पुनर्जीवित करने का सशक्त माध्यम है, जिससे शिल्पकारों को आजीविका मिलती है तथा सांस्कृतिक विविधता संरक्षित रहती है।

उपभोक्ता जागरूकता: शून्य-अपशिष्ट वस्त्रों व परिधानों को अपनाने से उपभोक्ताओं में सतत जीवनशैली, मरम्मत की प्रवृत्ति तथा सीमित संसाधनों के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है तथा वह इनके प्रति अपनी ज़िम्मेदारी भी समझते हैं।

सर्कुलर अर्थव्यवस्था: वस्त्रों व परिधानों के पुनरुपयोग, मरम्मत तथा पुनरावृत्ति से उपभोग-चक्र में निरंतरता आती है, जिससे उत्पाद एकल-उपयोग तक सीमित न रहकर लंबे समय तक उपयोगी बनता है। यह अर्थव्यवस्था में स्थिरता और संतुलन लाने में सहायक है। इससे न केवल आर्थिक सशक्तीकरण होता है, बल्कि सामाजिक समावेशन भी बढ़ता है।

चुनौतियाँ

शून्य-अपशिष्ट फैशन अपनाने में कई महत्वपूर्ण बाधाएँ हैं, जो उद्योग, उपभोक्ता तथा नीति-निर्माण से जुड़ी हैं-

डिज़ाइनिंग में जटिलता एवं तकनीकी कौशल: शून्य-अपशिष्ट परिधान-निर्माण में पैटर्न बनाने की जटिल प्रक्रिया तथा अनूठी कटिंग तकनीकों की आवश्यकता होती है। डिज़ाइनरों को CAD, CLO 3D जैसे सॉफ़्टवेयर में दक्ष होना होता है, जो विकासशील क्षेत्रों तथा छोटे ब्रांड्स के लिए भारी निवेश हो सकता है।

उपभोक्ता-व्यवहार में बदलाव की कमी: अधिकतर उपभोक्ता अल्प समय तक धारण किये जा सकने, पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधनों के लिए हानिप्रद जैसे पक्षों को नज़रअंदाज कर त्वरित (Fast) फैशन के सस्ते परिधान धारण करना पसंद करते हैं। 'जो दिखता है, वही सच है' - अर्थात् अगर परिधान सुन्दर है, तो सब कुछ सुन्दर वाली सोच ने सतत एवं शून्य-अपशिष्ट फैशन को जनप्रिय होने से रोका है और जागरूकता की कमी बनी हुई है।

लागत की वृद्धि: शून्य-अपशिष्ट फैशन में समय, मानव-संसाधन, विशेष डिज़ाइन सॉफ़्टवेयर तथा व्यावसायिक नीतियों आदि की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप ऐसे परिधानों की लागत त्वरित फैशन के परिधानों की तुलना में प्रायः अधिक होती है, जिससे वे सामान्य उपभोक्ता की पहुँच से बाहर हो जाते हैं।

औद्योगिक पैमाने पर उत्पादन की कठिनता: वर्तमान उत्पादन प्रणाली लीनियर मॉडल -अर्थात् 'कच्चा माल लेना → उत्पाद बनाना → बेचना → उपयोग के बाद कचरे में फेंक देना' पर आधारित है। कई फैशन उद्योग सरकारी नीतियों की जानकारी, आवश्यक पूँजी या प्रौद्योगिकी के अभाव के कारण बड़े स्तर पर कच्चे माल से लेकर उपयोग के पश्चात् कचरा बन गए उत्पादों से नवीन उत्पाद नहीं बना पाते हैं। इन चुनौतियों को पार करने हेतु नवीन नीति-निर्माण, शिक्षण-प्रशिक्षण तथा मजबूत बुनियादी ढांचे की आवश्यकता है, ताकि प्राकृतिक संसाधनों की रक्षार्थ शून्य-अपशिष्ट फैशन जैसी अवधारणाएँ कार्य-रूप में सामने आ पाएँ।

शून्य-अपशिष्ट फैशन पर कार्य कर रहे प्रमुख ब्रांड्स

अंतर्राष्ट्रीय शून्य-अपशिष्ट दिवस (30 मार्च) का प्रारम्भ 2023 में संयुक्त राष्ट्र महासभा प्रस्ताव 77/161 के अंतर्गत हुआ। यह पहल दो मुख्य लक्ष्यों पर केंद्रित है- प्रथम, वैश्विक स्तर पर अपशिष्ट प्रबंधन के महत्व के प्रति जागरूकता फैलाना और द्वितीय, सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जिम्मेदार पद्धतियों को बढ़ावा देना।

शून्य-अपशिष्ट की अवधारणा को अपनाते हुए अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड्स ने फैशन उद्योग में सतत परिवर्तन की दिशा में कार्य करना आरंभ किया है। ये ब्रांड्स न केवल पर्यावरणीय जिम्मेदारी को महत्व देते हैं, बल्कि इन्होंने पारदर्शिता, पुनरुपयोग और न्यूनतम अपशिष्ट उत्पादन को अपनी कार्य-शैली का हिस्सा बनाया हुआ है।

भारतीय प्रयास

Doodlage (Delhi): यह भारत का प्रमुख शून्य-अपशिष्ट फैशन ब्रांड है, जो 'कम खरीदें, बेहतर चुनें, लंबे समय तक उपयोग करें' के दर्शन पर कार्य कर रहा है। इसका हर परिधान सीमित संस्करण में होता है, जिससे अनावश्यक स्टॉक नहीं बनता।

Ka-Sha (Pune): यह एक सृजनात्मक फैशन ब्रांड है, जो हस्तशिल्प को समकालीन फैशन से जोड़ता है। इसकी 'हार्ट टू हार्ट' पहल पुराने वस्त्रों व परिधानों को पारम्परिक कढ़ाई और मरम्मत की तकनीकों द्वारा नया रूप देती है। इसका प्रयास फैशन को अधिक जिम्मेदार और सार्थक बनाने का है।

Iro Iro (Jaipur): यह फैशन ब्रांड वस्त्र-उद्योग के अपशिष्ट -अर्थात् पुराने व बेकार पड़े वस्त्रों तथा परिधानों, बचे हुए धागों आदि जैसी सामग्रियों का रचनात्मक तरीके से उन्नत पुनर्चक्रण कर नए उत्पाद बनाता है।

Rimagined (Bangalore): यह एक ऐसा फैशन ब्रांड है, जो सतत फैशन तथा हस्तशिल्प को प्रोत्साहित करते हुए पुरानी साड़ियों, डेनिम जीन्स तथा घरों में अनुपयोगी हो चुके वस्त्रों व परिधानों से रचनात्मक बैग, आकर्षक मैट्स, जूते-चप्पल एवं अन्य विभिन्न प्रकार के सजावटी उत्पादों का निर्माण करता है।

अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड्स

Zero Waste Daniel (USA): जीरो वेस्ट डेनियल न्यूयॉर्क में स्थित एक फैशन ब्रांड है, जो वस्त्र एवं परिधान-निर्माण से उत्पन्न अपशिष्ट एवं पुनर्चक्रण करने में चुनौतीपूर्ण सामग्रियों से स्त्री व पुरुष दोनों के लिए उपयुक्त परिधान बनाता है।

Eileen Fisher (USA): यह एक सतत फैशन ब्रांड है, जो चक्रीय फैशन को प्रोत्साहित करता है। इस ब्रांड का 'कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता' दर्शन उसके सभी उत्पादों और प्रक्रियाओं में समाहित है।

Patagonia (USA): यह ब्रांड फेयर ट्रेड सर्टिफाइड™ उत्पादों के लिए प्रतिबद्ध है, जो श्रमिकों को न्यायसंगत

मजदूरी तथा पर्यावरण अनुकूल उत्पादन प्रक्रियाओं को सुनिश्चित करता है।

उपरोक्त वर्णित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड्स के अतिरिक्त अन्य ब्रांड्स भी हैं, जो शून्य-अपशिष्ट फैशन की अवधारणा को व्यवहार में लाने का प्रयास कर रहे हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि फैशन यदि ज़िम्मेदारी से किया जाए, तो वह सामाजिक परिवर्तन तथा पर्यावरणीय संरक्षण का सशक्त माध्यम बन सकता है।

सुझाव और संभावनाएँ

शून्य-अपशिष्ट फैशन को व्यवहार में लाने और उसे व्यापक स्तर पर अपनाए जाने हेतु विभिन्न स्तरों पर प्रयासों की आवश्यकता है। निम्नलिखित सुझाव इस दिशा में सहायक हो सकते हैं-

डिज़ाइन शिक्षा में शून्य-अपशिष्ट पैटर्न कटिंग को शामिल करना: फैशन शिक्षण संस्थानों में शून्य-अपशिष्ट तकनीकों तथा उसके लिए आवश्यक पैटर्न कटिंग को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना अत्यंत आवश्यक है। इससे नए डिज़ाइनर्स इस अवधारणा को प्रारम्भिक चरण से ही समझ पाएँगे और भविष्य में इसे व्यावसायिक स्तर पर बेहतर ढंग से लागू कर सकेंगे।

शिल्पकारों को डिज़ाइन से जोड़ना: पारम्परिक शिल्पियों के पास शून्य-अपशिष्ट कार्यशैली की गहन पारम्परिक समझ होती है। इन्हें आधुनिक डिज़ाइन प्रक्रियाओं से जोड़कर न केवल शिल्प को नव-जीवन दिया जा सकता है, अपितु शून्य-अपशिष्ट फैशन की अवधारणा का विस्तार भी किया जा सकता है।

नीति तथा बाज़ार स्तर पर शून्य-अपशिष्ट को बढ़ावा देना: सरकार और औद्योगिक नीतियों में शून्य-अपशिष्ट तथा सतत डिज़ाइन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसके लिए टैक्स छूट, सब्सिडी, R&D फंडिंग तथा स्टार्टअप सहयोग जैसी योजनाएँ चलाई जा सकती हैं। बाज़ार में ऐसे उत्पादों के प्रचार-प्रसार और विक्रय हेतु केन्द्र भी विकसित करने की आवश्यकता है।

डिज़ाइनर तथा शिल्पी के बीच सहयोग को सशक्त करना: डिज़ाइन संस्थानों, स्वयंसेवी संगठनों एवं शिल्प-समूहों के मध्य समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए, ताकि डिज़ाइनर तथा शिल्पी मिलकर शून्य-अपशिष्ट उत्पाद विकसित कर सकें। इससे तकनीक व परम्परा का संतुलन बना रहेगा तथा नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।

शून्य-अपशिष्ट परिधान को जन-सुलभ बनाना: वर्तमान में शून्य-अपशिष्ट परिधान अपेक्षाकृत महंगे होते हैं। इनकी लागत को कम करने, उत्पादन की श्रृंखला को स्थानीय बनाने तथा डिज़ाइन को उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाने की दिशा में काम करना होगा। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, ई-कॉमर्स तथा सोशल मीडिया के माध्यम से इन्हें आम जनता तक पहुँचाना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त उपभोक्ताओं को इस विषय में जागरूक करना भी अनिवार्य है।

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय उपभोक्ताओं में वस्त्र और फैशन उद्योग में टिकाऊपन और नैतिकता के प्रति जागरूकता तेजी से बढ़ी है। एक अध्ययन के अनुसार 85% भारतीय उपभोक्ता टिकाऊ उत्पादों के लिए अधिक कीमत चुकाने को तैयार हैं, जबकि 74% खरीदारी के समय पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को ध्यान में रखते हैं। यह बदलाव शून्य-अपशिष्ट फैशन के लिए एक बड़ा अवसर पैदा करता है, जहाँ डिज़ाइन, उत्पादन और उपभोग के प्रत्येक चरण में कचरे को खत्म किया जाता है।

निष्कर्ष

शून्य-अपशिष्ट फैशन केवल एक डिज़ाइन अवधारणा ही नहीं है, अपितु यह एक समग्र दृष्टिकोण है, जो संसाधन संरक्षण, सांस्कृतिक पुनरुत्थान तथा सामाजिक उत्तरदायित्व सभी को एक साथ समाहित करता है। यह

न केवल संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को सुनिश्चित करता है, बल्कि उपभोक्ता को भी एक जागरूक और ज़िम्मेदार सहभागी बनाता है। यदि डिज़ाइन शिक्षा में शून्य-अपशिष्ट तकनीकों को स्थान मिले, नीति-निर्माण में सतत विकास को प्राथमिकता दी जाए और उपभोक्ताओं को जागरूक किया जाए, तो शून्य-अपशिष्ट फैशन एक आंदोलन के रूप में विकसित सकता है। यह आंदोलन न सिर्फ पर्यावरणीय संतुलन को पुनर्जीवित करेगा, बल्कि भारत की शिल्प कला और सांस्कृतिक धरोहर को भी वैश्विक मंच पर नया गौरव प्रदान करेगा। शून्य-अपशिष्ट फैशन इस बात की पुष्टि करता है कि फैशन केवल सौंदर्य और अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, अपितु जिम्मेदारी, नवाचार और दीर्घकालिक सोच का भी प्रतीक हो सकता है।

सन्दर्भ सूची:

1. आचार्य, भावना. (1995). प्राचीन भारत में रूप-श्रृंगार. पब्लिकेशन स्कीम
2. मोतीचंद्र. (1950). प्राचीन भारतीय वेश-भूषा. भारती-भण्डार
3. भाटिया, हर्षनन्दिनी. (1983). नारी श्रृंगार. ईपुस्तकालय.
4. Ahmed, S. & Khan, R. (2022). A study on waste disposal management in textile industry: A case study of Gul Ahmed. South Asian Management Review, 1(2), 14-36.
5. Centre for Environment Education (CEE). (2023). Approaches for circular textile and apparel industry in India: Baseline assessment report.
6. Ellen MacArthur Foundation. (2017). A new textiles economy: Redesigning fashion's future.
7. Fletcher, K. (2014). Sustainable fashion and textiles: Design journeys (2nd ed.). Routledge.
8. Pathak, A. (2006). Indian costumes. Roli Books.
9. Rissanen, T. (2008). Creating fashion without the creation of fabric waste. In J. Hethorn & C. Ulasewicz (Eds.), Sustainable fashion: Why now? Fairchild Books.
10. United Nations Environment Programme. (2025, April 4). Zero Waste Day shines a light on fashion and textiles.
11. Zero Waste Europe. (2012, November 15). A zero-waste program by Patagonia: The Common Threads Initiative.